Edit with WPS Office

St. Lawrence High School

A JESUIT CHRISTIAN MINORITY INSTITUTION

Hindi Study Material (02)

Class- 11 पाठ - मैं नर्क से बोल रहा हूँ **(भाग 2)**

Date: 20/06/2020

<u>लघु उत्तर</u>

१) "तुम जीवन का तिरस्कार और मरण का सत्कार करते हो? "
क) तुम से यहां पर कौन संबोधित है?
ख) 'जीवन का तिरस्कार और मरण का सत्कार' से लेखक का क्या आशय रखते हैं।
उ: क) मनुष्य।
ख) इस आधुनिक समाज में मनुष्य जीवन बड़ा ही दर्दनाक है। जीवित रहते व्यक्ति को कोई पूछा तक नहीं, उनकी निराशा का कारण, दरिद्रता और सुरक्षा के प्रति किसी का कोई ध्यान नहीं रहता, उनके अधिकारों से उन्हें वंचित रखा जाता है, उनकी कद्र नहीं होती। उनकी 'जीवन का पूर्ण तरह तिरस्कार' किया जाता है।
परंतु मृत्यु के पश्चात ही यह ढकोसले वाली दुनिया अपनी झूठी हमदर्दी को देहांत शरीर पर तक पहुंचाने की तमाम कोशिशें करती रहती है। अपनी तथाकथित झूठी शान को कायम रखने हेतु यही समाज के ठेकेदार आमिर, शोषित वर्ग मृत शरीर पर अपना झूठा कर्तव्य दिखाते हैं। उनके 'मरण का सत्कार' करते हैं।

२) 'जहां लालफ़ीते के कारण आग लगने के साल भर बाद बुझाने का आर्डर आता है। '
क) लेखक का नाम क्या है?
ख) प्रस्तुत पंक्ति किस कहानी से उद्धृत है?
उ: क) हरिशंकर परसाई।
ख) प्रस्तुत पंक्ति 'मैं नर्क से बोल रहा हूँ' कहानी से उद्धृत है।

३) हरिशंकर परसाई जी को नर्क में भेजने के बावजूद उन्हें दुख महसूस क्यों नहीं हुआ?
उ: हरिशंकर परसाई जी को नर्क में भेजने के बावजूद उन्हें दुख इसलिए महसूस नहीं हुआ क्योंकि उन्होंने अपनी जिंदगी भर प्रतिवाद नहीं करना नहीं सीखा था।

४) लेखक का प्रतिवाद न करना आधुनिक समाज से किस प्रकार सामंजस्य रखता है?
उ: प्रतिवाद का अर्थ है विरोध। समाज में उत्पन्न हुई किसी भी अन्याय, शोषण या अत्याचार के खिलाफ अपनी वाणी को प्रबल करना ही प्रतिवाद कहलाता है।
आधुनिक समाज पूर्णतः अधर्मी बनता जा रहा है, जहां धनी निर्धन पर अपनी स्वार्थ लिप्सा एवं स्वार्थीपन को कायम रखने हेतु कर्तव्यनिष्ठ है। परंतु दूसरी ओर अपने अधिकारों को प्राप्त एवं शोषण के खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत मनुष्य के दिलो-दिमाग से दूर होते जा रहे हैं।सर्वसाधारण इस नवीन युग में उन्हीं ताकतों एवं यश से निर्धन एवं कायर बनते जा रहे हैं।

५) "फिर भी तुम नर्क में रहोगे।"
क) तुम से कौन सांकेतिक है?
ख) यह पंक्ति किसने किससे कहा है?
उ: क) लेखक (हरिशंकर परसाई जी)।
ख) प्रस्तुत पंक्ति भगवान ने हरिशंकर परसाई जी से कहा है।

<u>शब्दार्थ</u>

१) अवस्था- दशा
२)तिरस्कार- अनादर
३) सत्कार- खातिरदारी तथा सेवा।
४) अर्थी- शव।
५) सेंध- चोर द्वारा चोरी के उद्देश्य से दीवार में किया गया छेद।
६) क्षोभ- व्याकुलता।
७) फरियाद- शिकायत।
८) बही- हिसाब- किताब लिखने की पुस्तक।
९) अट्टालिका- ऊंचा महल
१०) ऐंठ- मरोड़।

Edit with WPS Office

१२) इंद्रासन- इंद्र का सिंहासन।